RNI Regn.No.- 54447/78 स्थापित: 1978 Postal Reg. No. UA/NTL- 08/ 2024-26

पिघलता हिमालय

वर्ष 41 अंक 52 हल्द्वानी सम्वत् 2083 सोमवार 1 जून 2026 एक प्रति 5 रु., वार्षिक-200 रु. आजीवन 2000 रु.

संस्थापक- स्व.आनन्द बल्लभ उप्रेती
स्व.दुर्गा सिंह मर्तोलिया,
स्व.श्रीमती कमला उप्रेती

editorpighaltahimalay@gmail.com
Website-
www.pighaltahimalay.com

सम्पादक : श्रीमती गीता उप्रेती
संरक्षक : फली सिंह दत्ताल
मंगल सिंह मर्तोलिया

'खड़कू लासा' नाम से जाने जाते हैं ल्हासा जाने वाले खड़क सिंह

डॉ.देवराज पांगती से बातचीज

शौका समाज से वाई.एस.पांगती के बाद देवराज ने की थी पीएचडी

डीडीहाट में अपनी संस्कृति बनाए रखने के लिये नन्दा और रघुनाथ मन्दिर बनाया

डाक्टर ललित सिंह पांगती ने पिथौरागढ़ में खोला था पहला अस्पताल

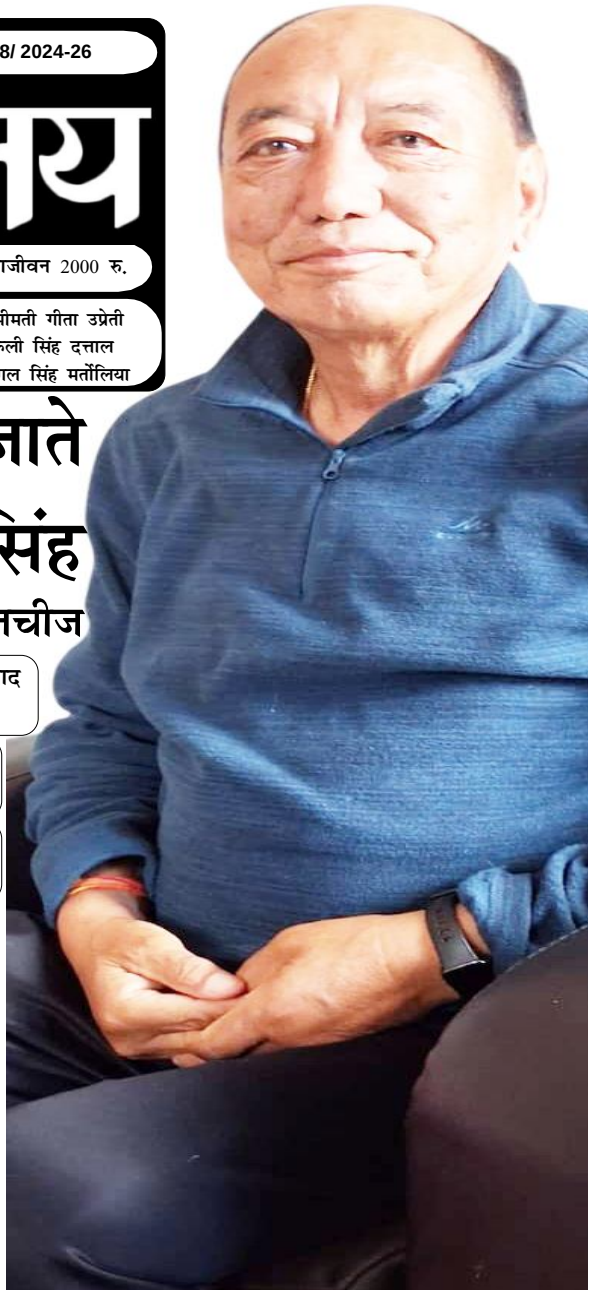

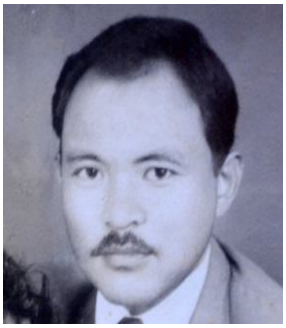

5 जून 1940 - 15 जनवरी 1989

स्व.दुर्गा सिंह मर्तोलिया

(संस्थापक पिघलता हिमालय)

की

86 वीं जयन्ती पर शत-शत नमन।

हिमालयी संस्कृति के स्तम्भ के रूप में संकल्प के साथ

पिघलता हिमालय परिवार एवं परिजन

कार्यालय प्रतिनिधि

आज का बाजार रसोईघर तक घुस चुका है और मिलावट का सामान चारों ओर सजा है। उन दिनों की सुनहरी यादें इतिहास बन चुकी हैं जब व्यापारी घोर यात्राओं के बाद भी रचते-बसते थे और विशुद्ध वस्तुओं का आदान-प्रदान होता था। भारत-तिब्बत व्यापार में शुरुआती व्यापार में जाने वाले खड़क सिंह पांगती 'खड़कू लासा' परिवार के डॉ.देवराज सिंह पांगती के साथ प्रस्तुत है आज की वार्तालाप और रोचक जानकारियां। इससे पहले परिवार के बारे में बताते हैं।

खड़क सिंह पांगती जोहार घाटी के बड़े व्यापारियों में थे। 19वीं सदी के अन्त 20 वीं सदी के शुरुआत में इनकी सक्रियता थी। जोहार से तिब्बत-ल्हासा जाने

शेष पृष्ठ 2 पर

लोक कथाओं में तत्कालीन समाज के ढांचे के विषय में इतनी सटीक जानकारी मिलती है, जितनी कि इतिहास से भी नहीं मिलती। सच तो यह है कि जहाँ इतिहास राजनैतिक, सामाजिक, आर्थिक एवं सामरिक कारणों से उसी रूप में कदाचित ही सामने आ पाता है, जिस रूप में घटनाएँ घटती हैं, वहीं लोक कथाएँ इन तथ्यों से मिर्यादित नहीं होती। इतिहास, जहाँ विद्वान इतिहासकारों द्वारा देशकाल की परिस्थितियों को ध्यान में रखकर, लिखा जाता है, वहीं लोक कथाओं के जनक व संचरण का माध्यम स्वयं 'लोक' ही होता है। इस कॉलम में लोककथा 'खाचिड़ी' प्रस्तुत है। -सम्पादक

रग्घू की ससुराल गुमदेश में थी, जो कि उसके घर से बहुत दूर पड़ता था। आने जाने का साधन कोई नहीं था। जंगली पहाड़ी रास्ते से पैदल ही आना जाना पड़ता। हाँ, बीच में काफी गाँव पड़ते थे। ससुराल पहुँचने में दो दिन पूरे लग जाते, इसलिये ससुराल वह कई वर्षों बाद ही जा पाता। उसकी पत्नी जमुना तो शादी के बाद एक बार भी अपने मायके नहीं जा पाई थी। इसका कारण यह था कि जब उसकी शादी हुई तो वह केवल आठ नौ साल की थी। अत: लम्बी पैदल यात्रा करना उसके बस की बात नहीं थी। रास्ते में नदी, नाले, चट्टानें व खड़ी चढ़ाई तथा एक दम सीधा उतार पड़ता था। जंगली जानवरों का डर भी अलग था। अत: ससुराल अकेले रग्घू ही जाता था।

रग्घू स्वयं तो कंगाल था, पर ससुराल उसको अच्छी मिली थी। वह जब भी जाता उसकी खूब आवाभगत होती। वह लोग लड़की के लिये कपड़े फल तथा दूसरी खाने पीने की चीजें भी रग्घू के हाथ भेज देते थे। जमुना जब कुछ सयानी हुई तो उसके पैर में चोट आ गई थी, जिससे पैर की हड्डी टूट गई थी, अत: मायके नहीं जा पाती थी। फिर बाल बच्चे ही हो गये, उन्हें छोड़ कर जाना भी ठीक नहीं था। उसको अपनी माँ की बहुत याद आती। रग्घू के आने पर वह तरह-तरह से मायके के बारे में पूछती जैसे- 'माँ अब कमजोर तो नहीं हो गई? भाई भाभियाँ उनके साथ कैसा सलूक करती हैं? नदी वाले खेत में इस साल क्या बोया? आजकल वहाँ पर कैसा लगता है?' इत्यादि-इत्यादि। यह सब पूछ कर वह मायके की याद में खो जाती। रग्घू यदि कभी उसके सवालों का ठीक जवाब न दे तो वह हंगामा खड़ा कर देती और झगड़े पर उतारु हो जाती। अत: जब भी रग्घू ससुराल जाता वह वहाँ की एक-एक बात बारीकी से अध्ययन करता ताकि वापसी में सब चीजों के बारे में ठीक से बता सके। स्वाभविक है जब पति ससुराल से लौटा है तो पत्नी अपने मायके के हालचाल जानने के लिए उत्सुक होगी ही। गुमदेश का पहनावा, खान-पान व रहन-सहन के ढंग रग्घू के गाँव के लोगों से लगभग अलग था। उसकी सास जो भी पकवान उसके लिये बनाती, उनका वह भली भाँति पूछ लेता है कहीं भूल न जाय इसलिये उस चीज का नाम वह बार-बार लेता। पिछली बार वह जब ससुराल से लौटा था तो उसकी पत्नी ने सबसे पहले यही सवाल पूछा था ''माँ ने तुम्हें क्या-क्या खिलाया।'' वह कई चीजों के नाम भूल गया था। पत्नी नाराज हो गई कि वह उसे कुछ बताना ही नहीं चाहता।

शेष पृष्ठ 3 पर

Print to PDF without this message by purchasing novaPDF (http://www.novapdf.com/)

पिघलता हिमालय

ईंधन बचाओ : फिजूलखर्ची पहले ही रुक जानी चाहिये थी

प्रधानमंत्री नरेन्द मोदी द्वारा वर्तमान हालातों को देखते हुए ईंधन बचाने, फालतू खर्च न करने, स्वच्छता, पर्यावरण का सन्देश दिया गया जो बहुत अच्छी बात है। इसको देखकर और सुनकर उत्तराखण्ड सरकार ने भी तुरन्त प्रभावी कदम उठाए और ऐलान हो गया कि मंत्रियों के काफिले से वाहनों की संख्या कम होगी, सप्ताह में एक दिन साइकिल या पैदल सफर होगा, सरकारी वाहनों का निजी रूप में उपयोग नहीं होगा। सरकार का फरमान और दिखने-दिखाने के दौर में जिलों में यही हलचल शुरू हुई। साइकिल में चलते हुए अपने फोटो सोशल मीडिया पर जारी होने लगे, बयान भी सुनाई और दिखाई दिये। चलो, कैसे भी सही यह होने तो लगा है।

असल में ईराक के साथ अमेरिका-इजराइल युद्ध के समय ही जिस प्रकार के हालात बन गये थे उससे रसोई गैस सहित तेल किल्लत की दुनियाभर में चर्चा तेज होने लगी। इसका प्रभाव हमने अपने आस-पास भी देखा लेकिन यह कहा गया कि आने वाले दिनों में सब ठीक हो जाएगा। जबकि सच्चाई यह है कि चाहे सबकुछ ठीक भी हो जाए हमें अपने पर नियन्त्रण करना ही चाहिये। आज जिस प्रकार से तेल बचाओ, पर्यावरण बचाओ जैसे यत्न प्रयत्न का ढोल बज रहा है, यह सब पहले ही हो जाना चाहिये।

सरकारी वाहनों का कितना ज्यादा दुरुपयोग होता रहा है, नेताओं मंत्रियों के पिछलग्गू वाहनों ने कितनी ज्यादा बर्बादी की है, यह किसी से नहीं छुपा है। अपने निजी कार्यों के लिये सरकारी वाहनों व साधनों का उपयोग बहुत चालाकी से अधिकारीगण करते रहे हैं। असल में ऐसी फिजूलखर्ची पहले ही रुक जानी चाहिये थी। अब जब बात छिड़ ही चुकी है तो इसपर शासन प्रशासन को सख्त होना होगा अन्यथा गरीब जनता का क्या उसके लिये सब भाषण ही है। और यही सब भविष्य के लिये खतरा भी बनेगा।

देश-विदेश की प्रमुख घटनाएं

नोबेल पुरस्कार विजेता मोहम्मदी

दुबई। ईरान की नोबेल शान्ति पुरस्कार विजेता नरगिस मोहम्मदी को दो सप्ताह से अधिक समय तक अस्पताल में भर्ती रहने के बाद तेहरान के एक अस्पताल से छुट्टी दे दी गई। मोहम्मदी (54) को घर पर ही रहने और आगे की देखभाल और दैनिक फिजियोथेरेपी कराने की सलाह दी गई है।

लाहौर की सड़कों के पुराने नाम आबाद

लाहौर। पाकिस्तान की पंजाब सरकार ने लाहौर की कई सड़कों और गलियों के आजादी से पहले के नाम को बहाल करने की योजना को मंजूरी दे दी है। इस पहल का उद्देश्य शहर की विभाजन पूर्व विरासत को पुनर्तीवित करना है। कुछ दशकों में लाहौर की कई ऐतिहासिक सड़कों और गलियों के नाम बदल दिए गए थे। ब्रिटिशकालीन और हिन्दू धर्म से जुड़े नामों को बदलकर इस्लामी, पाकिस्तानी या स्थानीय हस्तियों से जुड़े नए नाम रखे गए।

ईरान ने ओमान के साथ बनाई नई एजेंसी

तेहरान। दुनियाभर के लिए तनाव का प्रमुख केन्द्र बने होर्मुज जलडमरूमध्य के प्रबन्धन के लिए ईरान की शीर्ष सुरक्षा संस्था ने अमेरिका की धमकियों को नजरंदाज करते हुए एक नई एजेंसी के गठन की घोषणा की है। ईरान इसी एजेंसी के जरिए ओमान के साथ मिलकर इस रणनीतिक जलमार्ग से समुद्री आवागमन को विनियमित करेगा।

नेपाल के नए प्रधानन्यायधीश मनोज शर्मा

काठमाण्डू। मनोज कुमार शर्मा ने नेपाल के उच्चतम न्यायालय के नए प्रधान न्यायाधीश के रूप में शपथ ली। संसदीय सुनवाई समिति ने सर्वसम्मति से उनके नाम का समर्थन किया और इसे राष्ट्रपति रामचन्द्र पौडेल को भेजा था। इसके बाद पौडेल ने शर्मा को हिमालयी देश के उच्चतम न्यायालय का सीजे नियुक्त किया।

सैन डिएगो की मजिस्द में तीन मौत

सैन डिएगो। अमेरिका के सैन डिएगो स्थित मस्जिद में दो किशोरों की गोलीबारी में तीन लोगों की मौत हो गई। इसके बाद मस्जिद से कुछ दूर जाकर दोनों हमलावरों ने खुद को भी गोली मार ली।

न्यूयॉर्क टाइम्स ने किया दूसरा मुकदमा

वाशिंगटन। अमेरिकी दैनिक अखबार 'द न्यूयॉर्क टाइम्स' ने 5 महीनों में दूसरी बार अमेरिकी रक्षा विभाग के खिलाफ मुकदमा दायर किया और दलील दी कि रक्षा विभाग के मुख्यालय पेंटागन परिसर में पत्रकारों के लिये अधिकारियों की निगरानी में रिपोर्टिंग करने की अनिवार्यता की नीति प्रेस की स्वतंत्रता का उल्लंघन है।

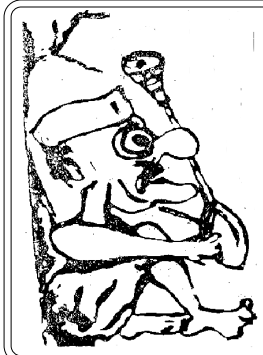

फसक

दाज्यू, प्रोफेसर भी गजब चीज होने वाला ठैरा

बिल-बाउचर लटी-पटी सब घपोराघपोर हो रही है बल

दाज्यू, केन्द्रीय जाँच ब्यूरो का दावा है कि नीट-यूजी पेपर लीक में गिरफ्तार पुणे की लेक्चर मनीषा गुरुनाथ मांढरे ने प्रोफेसर प्रहलाद विट्ठल राव कुलकर्णी समेत अन्य आरोपियों के साथ मिलकर पूरी साजिश रची थी। दाज्यू, इस लम्बे-चौड़े मामले में अभी जाँच चल ही रही है लेकिन इतना तो हम भी दावे से कह सकते हैं प्रोफेसर भी गजब चीज होने वाला ठैरा। हमारे इलाके में कभी गोदाम का ठेकेदार अब प्रोफेसर है। उनका कहना है- 'लकवामार हालातों में तरंग भर देती है यह सीट। लीपने को गोबर नसीब नहीं था, अब क्रीम-पाउडर का ढेर लग चुका है।'

दाज्यू, आँखिर लिखा-पढ़ा हो या पढ़ा-लिखा, खोपड़ी तो होती ही होगी। तभी तो बिल-बाउचर, लटी-पटी सब घपोराघपोर हो रही है बल। मैडम रूपमती की जिबड़ी तेल-पराठे, आलू-भुजिया, पनीरटिक्का के लिये लड़बड़ करती रहती है। कह रही थी- 'सुबह खाओ, दिन में कालेज में सिर खुजलाना जरूरी है।' दाज्यू, हमारे मन में बड़ी श्रद्धा होती थी कभी प्रोफेसरों के बारे में सुनकर। आजकल तो उखाऊ-बिखाऊ हो रहे हैं। टीए-डीए के लिये मारामारी, बस में लटककर जाने के बाद फुल टैक्सी वाला पैसा चाहिये बल। लीपने का अलग से और घीसने का दोगुना। क्या जो होने वाला हुआ विद्यार्थियों का? जोड़-जन्तर करके बेचारे कालेज पढ़ने आते हैं। दिनभर प्रोफेसरों का रौब और घर जाकर ईजा-बाबू की कचकच। मंत्री धनसिंह ज्यू कह रहे हैं- 'छात्रसंघ चुनाव में 50 प्रतिशत छात्राओं की भागीदारी सुनिश्चित की जाएगी।'

गजब ही होने लगा है। एनजीटी गंगा में गिरते सीवर पर सख्त हो रही है बल। हरिद्वार में गंगा में गिरते गन्दे नालों और सीवर प्रदूषण का मलबे को लेकर दायर याचिका की सुनवाई करते हुए एनजीटी ने केन्द्रीय वन एवं पर्यावरण मंत्रालय उत्तराखण्ड जल संस्थान, पेयजल निगम, मेला प्रशासन, जिलाधिकारी हरिद्वार, नमामि गंगे श्किान और केन्द्रीय प्रदूषण नियन्त्रण बोर्ड समेत कई विभागों को नोटिस जारी किया है। अगली सुनवाई 24 जुलाई को होगी।

दाज्यू, न जाने कितना मलबा समा चुका है। पता नहीं कितने बार सुनने सुनाने का काम भी हो चुका होगा। एक बार और सही। हर बात में कमेटी, बिल बाउचर, निरीक्षण, सर्वे.....कुछ न कुछ होता रहता है। कहते हैं चलते पानी में गन्दगी नहीं करनी चाहिये। ये पढ़े-लिखे लड़ाक-तैराक-फैराक सब बनने चले हैं और वहीं स्वीमिंगपुल में प्रेक्टिस के नाम पर गू-गाज कर देने वाले ठैरे। गरमी के सीजन में मय परिवार वाटरखेल में पकौड़ी खाकर तैराकी का मजा ले रही है नई पीढ़ी। प्रोफेसर की बिगड़ी औलाद अत्तर क गोली की तरह लड़बड़ कर रहा है। कहता है- 'डैडी ने प्रेक्टिकल में नम्बर दे दिये थे। अब डाक्टर बन जाऊंगा और मेडिकल क्षेत्र में नाम होगा।' दाज्यू, युद्ध स्तर पर काम चल रहा है। भवाली के व्यापार मण्डल अध्यक्ष को यौन शोषण के आरोप में पुलिस ने पकड़ा तो उनका कहना है षड्यन्त्र के तहत फंसाया गया है। दाज्यू, समझ नहीं आ रहा है क्या होगा समाज का। कितनी ही जागर लगा लो सब औतरने वाले हैं।

-तुम्हारा भुली झकरुवा

खड़कू लासा.....

प्रथम पृष्ठ का शेष

वाले शुरुआती भारतीय व्यापारियों में से एक थे। मिलम-उंटाधुरा-तकलाकोट के रास्ते होने वाले व्यापार में ऊन, नमक, पश्मीना इत्यादि ले जाते और बदले में अनाज, गुड़, कपड़ा लाते थे। सदियों का यह व्यापार 1962 के चीन-भारत युद्ध थम गया। शुरुआती दौर में 'ल्हासा' जाने के कारण खड़क सिंह जी को लोक परिवेश में 'खड़कू लासा' नाम से जाना जाता था, जो वर्तमान तक भी प्रसिद्ध है। खड़क सिंह जी के तीन सुपुत्र हुए- जोत सिंह, खुशाल सिंह, ललित सिंह। जोत सिंह पांगती के परिवार में देवराज पांगती, गंगा, गीता, विमला। खुशाल सिंह के परिवार में सुशील पांगती। डॉ. ललित सिह पांगती का असमय निधन हो गया। यह इलाहाबाद में शिक्षा ग्रहण करने के बाद पिथौरागढ़ लौटे और स्वास्थ्य व्यवस्था को देखते हुए सबसे पहला अस्पताल खोला था।

शिक्षाविद् डॉ. देवराज सिंह पांगती अपने परिवार की पृष्ठभूमि के अनुरूप गहरे व्यक्तित्व के हैं। पिथौरागढ़ मुख्यालय में निवास करने वाले पांगती जी के परिवार में श्रीमती रीता पांगती, सुपुत्र डाक्टर सौरभ पांगती हैं। जबकि विवाहित पुत्रियों में विनीता और मनीषा हैं। सन् 1955 में डीडीहाट में जन्मे पांगती जी बताते हैं कि बूबू खड़क सिंह 1947 में डीडीहाट आ गये थे। उन दिनों जबकि भारत-तिब्बत व्यापार बदस्तूर जारी था, बूबू की दूरदृष्टि थी वह डीडीहाट आएऔर दुकान खोली। इन्हें देखा-देखी जोहार से अन्य परिवार भी डीडीहाट आए। तब इसे दिगतड़ ही कहते थे और पशुचारक अपने अनुरूप जगह चयन कर बैठते। शौका समाज ने अपनी बसासत के साथ अपनी संस्कृति को यहाँ स्थापित किया। नन्दा माई और रघुनाथ जी का मन्दिर बनाया गया। नन्दा मन्दिर स्थापना के समय तत्कालीन एसडीएम वर्मा जी का काफी योगदान रहा है।

देवराज जी की हाईस्कूल तक की शिक्षा डीडीहाट में ही हुई। 1960 में यहाँ तहसील बनी और स्कूल स्थापित होने लगे। उस समय नारायण नगर में शिक्षण की व्यवस्था थी जहाँ भागीचौरा, डीडीहाट, गर्खा तमाम जगह से विद्यार्थी आकर शिक्षा ग्रहण करते लेकिन इन्होंने सीमान्त छात्रावास में रहते हुए पिथौरागढ़ से इण्डरमीडिएट किया। इसके बाद स्नातकोत्तर भी वहीं रहते किया। डॉ. डी. सी. पाण्डे के निर्देशन में राजनीति विज्ञान विषय से पीएचडी की। तब तक जोहार घाटी से प्रोफेसर वाई.एस.पांगती पहले पीएचडी करने वाले थे जो विज्ञान वर्ग थे। इसके बाद कला वर्ग से पहले व्यक्ति प्रोफेसर देवराज सिंह पांगती हुए। इनको देखादेखी हाल के समय में कुछ युवा उच्चशिक्षा में पर्दापण कर चुके हैं।

अपनी शिक्षा के बाद 1982 में डॉ. देवराज पिथौरागढ़ कालेज में नियुक्त हुए। 1998 में नारायण नगर कालेज में प्राचार्य रहे, बलुवाकोट कालेज भी इनकी देखरेख में था। प्रमोशन होने पर 2009 में लोहाघाट गये और 2011 में पुन: पिथौरागढ़ आए और फरवरी 2020 में यहीं से सेवानिवृत्त हुए। ऐसे दौर में जब कालेजों में राजनीति हाबी हो चुकी है और निरंकुशता है, इन्होंने बहुत ही कुशलता के साथ संचालन किया। इसी अनुरूप इनका विदाई समारोह भी दिखाई दिया था।

डॉ. देवराज जी अपने बचपन के दिनों को याद करते हुए बताते हैं कि डीडीहाट छोटा सा बाजार था। इसमें पुराने व्यापारियों में धनसिंह बूबू का 'पांगती बुक भण्डार' आज तक प्रतिष्ठित है। पूरन सिंह टोलिया बेहद सक्रिय थे और उनकी कन्ट्रोल की दुकान थी। बाद में देखादेखी कई लोग माइग्रेट होकर यहाँ बसे। रामलीला मैदान क्षेत्र मैदान था जिसमें बच्चे खेलते थे। इलाके के मुख्य व्यापारी जोहार के थे, जो अब अन्य स्थानों को जाने लगे हैं।

बातचीज के इस क्रम में श्रीमान दुष्यन्त सिंह पांगती बताते हैं कि डॉ. देवराज के पिता जोत सिंह जी रामलीला कलाकार भी थे। दशरथ, जनक की भूमिका में उन्हें आज भी याद किया जाता है। इस प्रकार बूबू खड़कू लासा की पीढ़ियां अपने कारोबार के साथ अपनी संस्कृति को बनाए हुए हैं।

Print to PDF without this message by purchasing novaPDF (http://www.novapdf.com/)

वैज्ञानिकों का समर्थन

आर्थिकी के साथ हिमालय को मिलेगी संजीवनी

डॉ. हरीश चन्द्र अन्डोला

पश्चिम एशिया में चल रहे तनाव के बीच गैस समेत ऊर्जा ईंधनों की सप्लाई पर्याप्त मात्रा में नहीं हो पा रही है। साथ ही क्रूड आयल के दामों में बेतहाशा बढ़ोत्तरी होने की वजह से देश की आर्थिकी पर भी असर पड़ रहा है। इसके चलते प्रधानमंत्री ने देशवासियों से ऊर्जा संसाधनों का कम से कम इस्तेमाल करने की अपील की है। जिससे देश की आर्थिकी मजबूत होने के साथ ही ये पहल हिमालय के लिए संजीवनी साबित होगी। क्योंकि कोविड काल के दौरान जब लाकडाउन लगा था, उस दौरान हिमालय पूरी तरह से स्वस्थ हो गया था। यही वजह है कि वैज्ञानिक भी इस बात पर जोर दे रहे हैं कि पीएम मोदी की अपील का जनता को पालन करना चाहिए. ऐसे करना हिमालय के स्वास्थ्य के लिए लाभदायक होगा। देश दुनिया में ईंधन की सप्लाई प्रभावित है, जिसके चलते वैश्विक स्तर पर क्रूड आयल के दाम भी लगातार बढ़ते जा रहे हैं. इसके चलते भारत पर भी अतिरिक्त आर्थिक दबाव पड़ रहा है। यही वजह है कि प्रधानमंत्री ने देशवासियों से अपील की है कि वह ऊर्जा संसाधनों का सीमित इस्तेमाल करें। साथ ही अगले एक साल तक गोल्ड न खरीदें। दरअसल गैस और ईंधन के साथ ही गोल्ड को इंपोर्ट करना पड़ता है। इसके लिए भारत सरकार को डॉलर खर्च करने पड़ते हैं। ऐसे में अगर ऊर्जा संसाधनों का सीमित इस्तेमाल होगा और गोल्ड की खरीदारी कम होगी, तो फिर इसका इंपोर्ट भी कम होगा। इससे देश का डॉलर अधिक खर्च नहीं होगा और भारतीय रुपया भी मजबूत रहेगा।

प्रधानमंत्री ने देशवासियों से जो अपील की है, उसका असर सिर्फ देश की आर्थिकी पर नहीं पड़ेगा, बल्कि ऊर्जा संसाधनों के कम इस्तेमाल से पर्यावरण और हिमालय पर भी इसका सकारात्मक प्रभाव पड़ेगा। दरअसल, अत्यधिक वाहनों का उपयोग और ऊर्जा संसाधनों के इस्तेमाल की वजह से ग्लोबल वार्मिंग हो रही है। वर्तमान समय में ग्लोबल वार्मिंग और क्लाइमेट चेंज, भारत ही नहीं बल्कि वैश्विक स्तर पर एक बड़ी चुनौती बनी हुई है। यही वजह है कि अगर ऊर्जा संसाधनों का सीमित इस्तेमाल किया जाता है, तो ग्लोबल वार्मिंग को रोकने में काफी फायदेमंद साबित होगी। खासकर पर्यावरण और हिमालई क्षेत्रों पर इसका काफी सकारात्मक प्रभाव देखने का मिलेगा। इसका एक जीत जागता उदाहरण कोरोना काल के दौरान लगा लॉकडाउन है। वैश्विक महामारी कोरोना काल के दौरान, भारत सरकार ने जनता को सुरक्षित रखने के लिए चरणबद्ध तरीके से देश भर में लॉकडाउन लागू कर दिया था। हालांकि, उस दौरान शुरुआती दौर में आम जनता को तमाम परेशानियों का सामना करना पड़ा लेकिन देश भर में लागू लॉकडाउन का हिमालय और पर्यावरण पर काफी अधिक सकारात्मक प्रभाव देखने को मिला था। लॉकडाउन के दौरान न सिर्फ देश भर में पॉल्यूशन का असर घट गया था, बल्कि क्लाइमेट चेंज जैसी समस्या से भी लोगों को कुछ समय के लिए निजात मिली थी। खास बात यह रही कि गंगा, हरिद्वार तक पूरी तरह से साफ हो गई थी। पर्वतीय क्षेत्रों में नए पौधों के उगने और वन्य जीवों के भ्रमण की गतिविधियां भी बढ़ गई थी। इसी वजह से माना जा रहा है कि अगर देश की जनता पीएम की अपील को मानती है, तो ये हिमालय के लिए संजीवनी साबित होगी। जब देशहित सर्वोपरि हो, तब प्रत्येक नागरिक और जनप्रतिनिधि का दायित्व है कि वह अपने स्तर पर संसाधनों के संरक्षण में योगदान दे। मुख्यमंत्री ने सभी मंत्रियों, जन प्रतिनिधियों और अधिकारियों से भी कहा है कि वे अनावश्यक वाहनों के उपयोग से बचें, सार्वजनिक परिवहन को बढ़ावा दें तथा ऊर्जा संरक्षण को जनआन्दोलन का रूप देने में अपनी सक्रिय भूमिका निभाएं।

ज्योतिष की बातें

2 जून 2026 को गुरु शत्रुराशि मिथुन से निकलकर उच्चराशि कर्क में प्रवेश करेगा अत: गुरु अत्यन्त बली होगा इसलिए अत्यन्त शुभफल प्रदान करेगा। इस समय गुरु अतिचारी होने के कारण पाँच महीने बाद ही सिंह राशि में चला जाएगा। मन्त्रेश्वरकृत फलदीपिका के अनुसार गुरु दूसरे, पाँचवें, सातवें, नवमें और ग्यारहवें स्थान पर शुभफल प्रदान करता है। गुरु धन-समृद्धि, शालीनता, विवाह, पुत्रलाभ, उच्चशिक्षा, धर्म परायणता, अध्यात्म, संस्कृति आदि का कारक होता है। अत: गुरु अपने कारक विषयों में मिथुन, मीन, मकर, वृश्चिक व कन्या राशि के जातकों को अगले पाँच माह अत्यन्त शुभफल प्रदान करेगा। अन्य राशियों को भी सामान्य शुभफल प्राप्त होगा। इन पाँच माह की अवधि में गुरु की विभिन्न ग्रहों से युति व दृष्टि के अनुसार गुरु के शुभाशुभ फलों में न्यूनाधिक परिवर्तन भी होता रहेगा।

यहाँ पर गुरु के गोचर का ही फलित लिखा गया है इसमें किसी अन्य ग्रह के गोचर को सम्मिलित नहीं किया गया है अत: यह स्थूल रूप से ही सही होता है। व्यक्ति विशेष का सूक्ष्म फलादेश उसकी जन्म कुण्डली, महादशा आदि पर निर्भर करता है ।

शुभं भवतु !!

-ओंकार नाथ कोष्टा
ज्योतिर्विद् एवं आयुर्विद्

सम्यक् विचार

भीड़ की भेड़चाल

लगभग पचास वर्ष पहले एक पिक्चर आई थी श्जय सन्तोषी माँ। उसको देखकर लड़कियों ने सन्तोषी माता के नाम से शुक्रवार का व्रत रखना शुरू कर दिया था और जगह-जगह सन्तोषी माता के मन्दिर बना दिए गए थे। यहाँ तक कि भगवान के प्रत्येक मन्दिर में भी सन्तोषी माता की मूर्ति स्थापित कर दी गई थी। जबकि सन्तोषी माता का वर्णन किसी भी पुराण या इतिहास में नहीं है।

उसके दो वर्ष बाद 1977 में 'शिर्डी के साईं बाबा' नाम की पिक्चर आई। उस पिक्चर से प्रभावित होकर लोग शिर्डी के साईं बाबा मन्दिर (वास्तव में मज़ार) में दर्शन के लिए जाने लगे। शिर्डी में भीड़ बढ़ने लगी। फिर लगभग सभी शहरों में साईं बाबा के मन्दिर बना दिए गए या फिर पुराने सनातन मन्दिरों में साईं बाबा की मूर्ति स्थापित कर दी गई।

उसके बाद एक दाती महाराज नाम के सन्त प्रकट हुए। उन्होंने 'शनि शत्रु नहीं मित्र है' इस घोषवाक्य के साथ शनि ग्रह की इतनी महिमा गाई कि शनि महाराज के मन्दिर भी जगह-जगह बनने लगे और पुराने मन्दिरों में भी शनि की मूर्ति स्थापित की जाने लगी। उसी समय से शनि शिंगणापुर मन्दिर में भयंकर भीड़ होने लगी । फिर ऐसा समय आया कि सालासर बालाजी और मेहंदीपुर बालाजी के मन्दिरों में महाभयंकर भीड़ उमड़ने लगी। सारी भीड़ उसी दिशा में चलने लगी। अब समय चल रहा है खाटूश्याम का। इस समय सारी भीड़ खाटूश्याम मन्दिर की ओर दौड़ रही है। कई जगह खाटू श्याम के नये मन्दिर भी स्थापित हो गए हैं।

इसके बाद किसी और का समय आएगा, वहाँ भीड़ बढ़ेगी। उसके बाद किसी और का समय आएगा फिर वहाँ पर भीड़ बढ़ेगी। आज का हिन्दू इस तरह का हो गया है कि इसको न तो भगवान से कोई मतलब है, न ही देश से मतलब, न धर्म से, न समाज से, न पड़ोसी से। इसको मतलब है सिर्फ भीड़ से। जहाँ भी भीड़ जाती हुई दिखती है उसी के पीछे-पीछे दौड़ पड़ता है। भेड़चाल इसी को कहते हैं।

यहाँ पर मेरा इतना ही कहना है कि भीड़ का अनुगमन करने के पहले सनातन धर्म के मानने वालों को एक बार अपनी बुद्धि विवेक का भी सदुपयोग कर लेना चाहिए।

-ओंकार नाथ कोष्टा

खाचिड़ी.....

प्रथम पृष्ठ का शेष

इसलिये अबकी बार वह जब ससुराल गया तो खाने की हर चीज का नाम रटने लगा। पढ़ा लिखा वह था नहीं ताकि किसी कागज पर चीजों का नाम लिख लेता। इस बार सास ने उसके लिये कई प्रकार के व्यंजन तैयार किये, जिनमें से कई के नाम वह जानता ही था क्योंकि वह वर्षों से यहाँ आता रहा था। केवल दो तीन व्यंजन ऐसे थे, जिनका न तो उसने पहले नाम सुना था न ही इनका रसास्वादन ही किया था। इनमें से एक व्यंजन का नाम पूछने पर उसे बताया गया कि इसे खिचड़ी कहते हैं। एक और व्यंजन का नाम भी उसने मालूम किया परन्तु यह नाम ज्यादा कठिन नहीं था। इसे पूरे समय में, घर पहुँचने तक, भूलने की सम्भावना उसे नजर नहीं आती थी पर 'खिचड़ी' उसके लिये नया शब्द था, अत: जब वह वापस आने लगा तो उसने निश्चय किया कि रास्ते भर 'खिचड़ी' 'खिचड़ी' रटता जाएगा। इसके दो फायदे भी सामने थे- एक तो यह कि उसे नाम कण्ठस्थ हो जायेगा, दूसरे, चढ़ाई चढ़ते समय उसे थकान महसूस नहीं होगी जैसे जै माता दी, 'जै माता दी, प्रेम से बोलो जय माता दी' बोलते-बोलते लोग आसानी से लम्बे चढ़ाई पार कर जाते हैं। वह रास्ते भर 'खिचड़ी' खिचड़ी' रटता हुआ चला जा रहा था कि ऊपर चट्टान से किसी बन्दर के पैर लग जाने से एक बड़ा पत्थर लुढ़क कर उसकी ओर तेजी से आने लगा। जान को पूरा खतरा था, अत: वह 'खिचड़ी' 'खिचड़ी' की रटन्त छोड़ते हुये दूसरी ओर को तेजी से भागा, जिस ओर पत्थर गिरने की सम्भावना नहीं थी। कुछ देर तक वह गुजर गये हादसे के बारे में सोचता रहा। तरह-तरह की कल्पनाएं उसके मन में आई कि आज अगर उसे कुछ हो जाता तो उसके घर वालों को खबर कौन देता या उसके बच्चे व पत्नी किसके सहारे जीते इत्यादि इत्यादि। यही सोचते-सोचते उसे पता भी न चला कि उसने कब इतनी खड़ी चढ़ाई पार कर दी। चढ़ाई पार करके वह एक पेड़ की छाया में सुस्ताने के लिये बैठा। वहीं से एक गाँव प्रारम्भ होता था। ज्यों ही गाँव पर उसकी नजर पड़ी, उसे खिचड़ी शब्द का ध्यान आया परन्तु वह इसे भूल चुका था। दिमाग पर काफी जोर डालने पर उसे 'खाचिड़ी' याद आया। अत: वह अब 'खाचिड़ी' 'खाचिड़ी' रटता हुआ आगे बढ़ा। गाँव भी आ गया।

गाँव में फसल पक कर तैयार हो गयी थी परन्तु इस बार न जाने कहाँ से इतनी अधिक चिड़ियाँ आ गई कि उन्होंने किसानों की नाक में दम कर रखा था। गाँव वाले एक खेत से चिड़ियों को भगाते तो वह दूसरे खेत पर हमला कर देती। चिड़ियों ने खड़ी फसल को काफी नुकसान पहुँचा दिया था। दो साल पहले वर्षा बहुत कम हो रही थी, पर इस साल समय पर वर्षा होने से फसल अच्छी हुई तो चिड़ियाँ उसे बर्बाद करने पर तुली थी। अत: चिड़ियों को भगाने में सभी लोग जुटे हुए थे। कोई कनस्तर बजा रहा था तो कोई घण्टी। बच्चे जोर-जोर से चिल्ला रहे थे 'भाग जा चिड़ी, भाग जा चिड़ी. .....' इतने में रग्घू 'खाचिड़ी' 'खाचिड़ी' की रट लगाता हुआ गाँव में पहुँचा। लोगों को आश्चर्य हुआ कि यह कैसा आदमी है? वह जी-जान से चिड़ियों को भगा रहे थे और यह था कि 'खाचिड़ी' की रट लगाये हुए था। लोगों ने सोचा कि यही चिड़ियों को फसल नष्ट करने के लिए उकसा रहा है। खाचिड़ी का स्पष्ट अर्थ था कि चिड़िया खा। कुछ लोगों ने एक और शंका जाहिर की कि कहीं किसी टोने के बल पर यही तो चिड़ियों को नहीं बुला लाया है, क्योंकि उन्होंने हैमलिन के उस बाँसुरी वाले के विषय में सुन रखा था जो जब चाहे बाँसुरी की तान पर लाखों चूहों को बुला लेता था। अत: कुछ ग्रामीणों ने रग्घू को, सफाई का कोई अवसर दिये बिना ही लात घूसों से पिटाई शुरू कर दी। वह लहू लुहान हो गया। अन्त में उसने एक बिनती की कि उसे आगे क्या रटना चाहिये?

लोगों ने कहा कि यदि उसे कुछ न कुछ कहने की आदत ही है तो वह 'जाचिड़ी' 'जाचिड़ी' कहता हुआ जा सकता है। अब वह आगे के रास्ते में 'जाचिड़ी' 'जाचिड़ी' रटता हुआ आगे बढ़ा। थोड़ी देर में एक और गाँव आ गया। वह गाँव चिड़ी मारो का था। चिड़िया पकड़ना ही उनका मुख्य धन्धा था और इसी से उनके परिवारों का भरणपोषण होता था। इस साल इस ओर चिड़ियों के बड़े-बड़े झुण्ड निकल आये थे। कई लोग जाल बिछाकर चिड़ियों को फंसाने के लिये चारा डाले हुए थे। चिड़ियों के कई झुण्ड पेड़ों पर बैठे थे और शीघ्र ही उनके जाल में फंसने की आशा थी। लोग जाल लगाकर स्वयं आड़ में छिपे बैठे थे। इतने में ही रग्घू रास्ते के उन पेड़ों के पास पहुँच गया जहाँ जाल लगे थे। उसके अचानक आने से व जोर की आवाज सुनकर सारी चिड़ियाँ पेड़ों से उड़ कर भाग गई। चिड़ीमार लोगों की आशाओं में पानी फिर गया। चिड़ियों का झुण्ड उस गाँव को छोड़कर दूसरे ही गाँव की ओर चला गया। चिड़ीमारों के क्रोध का कोई ठिकाना न रहा। सबने बुरी तरह से उसकी धुनाई कर दी। वह कराहता हुआ आगे बढ़ा। फिर उसे अपनी 'रट' का ध्यान आ गया पर वह शब्द फिर भूल गया। उसे 'खाचील' याद आया। यहाँ से वह पुन: 'खाचील, खाचील' की रट के साथ आगे बढ़ा। रास्ते में उसे एक शव यात्रा जुलूस मिला। गाँव के किसी वृद्ध व्यक्ति का गोलोक वास हुआ था। बड़े सम्मान के साथ शव को फूलों से सजा कर ले जाया जा रहा था। 'खाचील, खाचील' शब्द सुनते ही वह चौंके। उन्हें यह बात बहुत बुरी लगी कि वे तो बड़े सम्मान के साथ वृद्ध का अन्तिम संस्कार करना चाहते हैं, और यह मूर्ख है कि शव को चील कौओं के द्वारा नोच खाने की कामना करता है। अत: शवयात्रियों ने उसे गुस्से में आकर खूब पीटा। अब उसके आगे से कोई शब्द न बोलने की ठान ली। वह बहुत बुरी अवस्था में अपने घर पहुँचा। उसकी पत्नी ने कुशल क्षेम पूछने के बजाय सबसे पहले यही पूछा 'माँ ने तुम्हें क्या-क्या खिलाया?' परन्तु एक और पकवान, जिसका नाम न भूलने की उसे उम्मीद थी, उसे भी वह भूल गया। अत: वह पत्नी को कुछ नहीं बता पाया। उसके बदन में काफी दर्द था। वह कराहने लगा। कराहते-कराहते उसके मुँह से निकला 'लोगों ने निर्दयता पूर्वक मेरे बदन को पीट-पीट कर हलुआ बना दिया है।' अपने इस वाक्य से वह स्वयं ही अचानक विस्तर से उछल पड़ा और पत्नी से बोला- 'हाँ, जो दूसरा पकवान तुम्हारी माँ ने मुझे खिलाया था, वह हलुआ था।' पहला पकवान 'खिचड़' तो वह रास्ते में ही भूल चुका था।

Print to PDF without this message by purchasing novaPDF (http://www.novapdf.com/)

मसूरी वैकल्पिक मार्ग का चौड़ीकरण होगा

देहरादून। मसूरी विधानसभा क्षेत्र में सड़क सम्पर्क को मजबूत करने की दिशा में कबीना मंत्री गणेश जोशी ने गजियावाला में देहरादून-किमाड़ी-लम्बीधार-कार्ट मैकेंजी-कम्पनी गार्डन मोटर मार्ग के चौड़ीकरण कार्य का शिलान्याश किया। करीब 14.55 करोड़ रुपये की लागत से बनने वाली इस परियोजना के तहत सप्लाई कैंट से लम्बीधार-बासागाड़-मसूरी तक 24 किमी तक सिंगल लेन मार्ग को इंटर मीडिएट लेन में परिवर्तित किया जाएगा।

चूका हेलीपैड निर्माण कार्य जारी

टनकपुर। चूका में बनाए जा रहे हेलीपैड का 40 प्रतिशत निर्माण कार्य पूरा हो चुका है। लोनिवि ने अगस्त माह तक निर्माण कार्य पूरा कर हेलीपैड को उड्डयन विभाग को सौंपने का लक्ष्य रखा है। पूर्णागिरी में श्रद्धालुओं की बढ़ती संख्या को देखते हुए सीएम ने वर्ष 2023 में चूका में हेलीपैड निर्माण की घोषणा की थी। लोनिवि की ओर से 0.593 हेक्टेयर भूमि पर 1.88 करोड़ रुपये की लागत से निर्माण कार्य कराया जा रहा है।

पर्यावरण मंत्रालय से जवाब तलब

नैनीताल। खड़िया खनन से बागेश्वर जिले के काण्डा तहसील के गांवों में आई दरारों के मामले में स्वत: संज्ञान लिए जाने वाली जनहित और 165 खनन इकाईयों से जुड़ी याचिकाओं पर हाईकोर्ट ने सुनवाई करते हुए पर्यावरण मंत्रालय से जवाब तलब किया। मुख्य न्यायाधीश मनोज कुमार गुप्ता व न्यायमूर्ति सुभाष उपाध्याय की खण्डपीठ ने केन्द्रीय पर्यावरण मंत्रालय से जिन खनन इकाईयों पर रोक लगी है, उन पर सुप्रीम कोर्ट के आदेश के आधार पर अपना जवाब प्रस्तुत करने को कहा है।

पूर्व सीएम खण्डूरी को श्रद्धासुमन

उत्तराखण्ड के पूर्व मुख्यमंत्री भुवन चन्द्र खण्डूरी के निधन के बाद से जगह-जगह श्रद्धांजलि सभा कर उन्हें श्रद्धासुमन अर्पित करते हुए उनकी ईमानदारी को किया जा रहा है। 19 मई 2026 को लम्बी बीमारी के बार मेजर जनरल (सेनि) खण्डूरी का निधन हो गया था। अन्तिम संस्कार हरिद्वार में किया गया।

परिक्रमा

फचैऽक

अमेरिका भली कैं वां फ्यूज है गो, ईरान दगड़ लड़ै लड़न में वीकि हर तरफ छी छी थू थू हैरै, इराककि वां मधत करन में इराककि वां मधत करन में, ट्रंप सैपनकि देखो छां फना है रै कौंछी एक सपक में है जालि छां, आपणै घर तनी तना है गै कैकि मधत कैक तरु लाग्ल, देश हमर लै कनफ्यूज है गो ईरान ततुक पितिल न भै, अमेरिका भली कैं वां फ्यूज है गो।

गणेश पाण्डेय

नन्दादेवी मर्तोली कपाट खुलने पर रौनक

मुनस्यारी। हिमालयी माँ नन्दा देवी मर्तोली के कपाट खुलने के बाद से रौनक है। मल्ला जोहार के नन्दामाई मन्दिर के कपाट 15 मई को विधि विधान के साथ खुल गये थे। पुरोहित पं. दिनेश चन्द्र जोशी ने मंत्रोच्चारण के साथ पाठ करवाया। इस शुभ अवसर पर जिला पंचायत के सहायक अभियन्ता, कनिष्ठ अभियन्ता, ठेकेदार कुन्दन सिंह धर्मशक्तू, ग्राम के धाम सिंह, रघुनाथ सिंह, नारायण सिंह आदि ने ढस्सू कमर-मर्तोली तीन किमी. प्रस्तावित मोटर मार्ग का संयुक्त निरीक्षण भी किया। बताया जा रहा है कि जुलाई 2026 तक इस मोटर मार्ग का निर्माण पूर्ण हो जाएगा। हिमालयी माँ नन्दा देवी मर्तोली ट्रस्ट के प्रबन्ध न्यासी चन्द्र सिंह मर्तोलिया ने सभी को नन्दामाई कपाट खुलने पर बधाई प्रेषित की है।

हत्यारोपी के बरी होने पर रोष, ज्ञापन

बेरीनाग। हत्या के मामले में आजीवन कारावास की सजा पाए व्यक्ति को हाईकोर्ट से बरी होने के बाद ग्रामीणों में रोष है। उन्होंने सीएम को ज्ञापन सौंपते हुए अभियोजन पक्ष पर शिथिलता बरतने का आरोप लगाया है।

माछीखेत ग्राम के लोगों ने पूरे प्रकरण की निष्पक्ष जाँच की मांग करते हुए कहा कि सुप्रीम कोर्ट में सरकार की तरफ से अपील दायर कर प्रभावी पैरवी हो। माछीखेत के ग्रामीणों ने हरीश डांगी के नेतृत्व में तहसील कार्यालय पहुंचकर तहसीलदार के माध्यम से सीएम को ज्ञापन भेजा और कहा कि ततकलीन प्रधान पुष्कर सिंह डांगी की हत्या के मामले में हमें न्याय की उम्मीद थी। आरोप लगाया कि सरकार अभियोजन पक्ष ने मामले में शिथिलता बरती जिस कारण पूर्व में जिला एवं सत्र न्यायालय से आजीवन कारावास की सजा पाए व्यक्ति को बगैर पीड़ित पक्ष की सुनवाई के ही हाईकोर्ट ने बरी कर दिया। वर्ष 2020 में माछीखेत के तत्कालीन प्रधान पुष्कर सिंह डांगी की उनके घर में हत्या कर दी गई। आरोप उनके रिश्ते के भतीजे पर लगा, जिसे अदालत ने 2023 में सजा सुनाई। अब हत्या में सबूत न मिले पर बरी कर दिया।

हिल हेरिटेज स्टेट गेस्ट हाउस बनेगा

बागेश्वर। पारम्परिक पहाड़ी वास्तुकला और आधुनिक सुविधाओं से युक्त राज्य अतिथि गृह बनाने की तैयारी है। सीएम के निर्देशों के तहत प्रस्तावित इस परियोजना को प्रशासनिक जरूरतों के साथ पर्यटन और स्थानीय संस्कृति से भी जोड़ा गया है। बीते दिनों देहरादून सचिवालय में आयोजित उच्चस्तरीय बैठक में बागेश्वर के ग्राम टेलापालन में 45 नाली भूमि पर बनने वाले हिल हेरिटेज स्टेट गेस्ट हाउस की विस्तृत परियोजना रिपोर्ट पर चर्चा हुई। करीब 17.52 करोड़ रुपये की लागत से बनने वाले इस परिसर को उत्तराखण्ड की पारम्परिक पहाड़ी शैली के अनुरूप विकसित करने पर जोर दिया गया। इस अतिथि गृह के बनने से बागेश्वर जिले में प्रशासनिक गतिविधियों को गति मिलेगी, अतिथितियों, पर्यटकों को बेहतर आवासीय सुविधाएं उपलब्ध होंगी। स्थानीय पर्यटन, रोजगार और क्षेत्रीय विकास को बढ़ावा मिलेगा।

जाम से रानीखेत का पर्यटन चौपट

रानीखेत। होटल एवं रेस्टोरेंट एसोसिएशन ऑफ रानीखेत ने कैंची धाम क्षेत्र में लागातार लग रहे भयंकर जाम पर गहरी चिन्ता व्यक्त करते हुए कहा कि इसका सीधा असर रानीखेत के पर्यटन कारोबार पर पड़ रहा है। पराधिकारियों ने चेतावनी दी कि यदि शासन-प्रशासन ने जल्द प्रभावी समाधान नहीं निकाला तो होटल व्यवसायी और पर्यटन से जुड़े लोग आन्दोलन के लिए बाध्य होंगे। एसोसिएशन ने सरकार से भवाली-रामगढ़-मुक्तेश्वर वैकल्पिक मार्ग को शीघ्र चौड़ीकरण और सुदृढ़ीकरण की मांग की ताकि पर्यटकों को सुरक्षित और सुगम यात्रा मिल सके। साथ ही रानीखेत-भतरौंजखान-रामनगर मार्ग को चौड़ा करने की मांग भी की। इस अवसर पर अध्यक्ष हिमांशु उपाध्याय, गोविन्द सिंह बिष्ट सहित अन्य थे।

भवाली की चर्चा भी अब कम नहीं है

नैनीताल। सेनीटोरियम अस्पताल के कारण पहचान रखने वाला भवाली अब कई अन्य कारणों से बेहद चर्चा में है। राजनीति की मौन धुरी तो यह है ही अब उल-जलूल हरकतों से इसे बदनाम किया जा रहा है। ताजा मामला व्यापार मण्डल अध्यक्ष नरेश पाण्डे से जुड़ा है। युवती द्वारा आरोप के बाद पुलिस ने उन्हें तुरन्त पकड़ लिया और बीस घण्टे की पूछताछ के बाद छोड़ दिया। दूसरी ओर युवती ने शिकायती पत्र वापस लिया हालांकि इससे पहले ही पुलिस मामला दर्ज कर चुकी थी। पुलिस से छूट के बाद नरेश पाण्डे के समर्थकों ने उनका जोरदार स्वागत किया। उनके साथ रहने वाले बाउंसरों पर पुलिस ने सख्ती की है। फिलहाल जांच-पड़ताल के साथ ही भवाली का यह प्रकरण सुर्खियों में है।

गैरसैंण और कांडा में मल्टीलेवर पार्किंग

देहरादून। सीएम पुष्कर सिंह धामी के निर्देश पर पर्वतीय नगरों में यातायात व्यवस्था सुधारने के लिए आवास विभाग ने तैयारी तेज की है। सचिव आवास डॉ. आर.राजेश कुमार की अध्यक्षता में विभागीय व्यय समिति की बैठक में चमोली के गैरसैंण और बागेश्वर के काण्डा में मल्टीलेवर पार्किंग को सैद्धान्तिक मंजूरी दी गई। गैरसैंण में 1504.35 लाख की लागत और काण्डा में 505.85 लाख रुपये की लागत से यह पार्किंग बनाई जाएगी।

आदि कैलास में वाहनों को सुरक्षा दें

पिथौरागढ़। आदि कैलास यात्रा रूट पर अज्ञात लोग बाहर से आने वाले वाहनों को नुकसान पहुंचा रहे हैं। इसी शिकायत को लेकर देवभूमि टैक्सी आनर्स वेलफेयर सोसायटी ने एआरटीओ अभिनव गहतोड़ी को ज्ञापन देते हुए कहा कि आदि कैलास क्षेत्र में पिथौरागढ़ शहर के टैक्सी चालकों के साथ अभद्रता रोकी जाए।

जोहार भवन डीडीहाट

डीडीहाट। जोहार भवन डीडीहाट का उद्घाटन समारोह 7 जून को किया जा रहा है। इसके मुख्य अतिथि विधायक विशन सिंह चुफाल होंगे। जोहार सामाजिक एवं सांस्कृतिक समिति द्वारा बेहद रचनात्मक कार्यों के बीच यह बड़ा कार्य है। इस मौके पर समिति क्षेत्रवासियों से भागीदारी की अपील की है।

जम्मू-काठगोदाम कानपुर गरीब रथ

हल्द्वानी। दिसम्बर महीने से बन्द चल रही जम्मू-काठगोदा-कानपुर गरीब रथ ट्रेन अब जून में दोबारा संचालित हो रही है। पूर्व की भाँति यात्री इसमें तत्काल आरक्षण का लाभ उठा सकते हैं।

गर्मी से डायरिया के मामले बढ़े

हल्द्वानी। भीषण गर्मी के कारण बच्चों में डायरिया, उल्टी-दस्त और बुखार जैसी बीमारियों के मामले बढ़े हैं। सुशीला तिवारी और बेस अस्पताल में पीड़ित बच्चों को भर्ती कराया गया है। भीषण गर्मी से बचने को पहाड़ को यात्री भीड़ है।

आचार्य दिनेश चन्द्र जोशी की स्मृति में डाक टिकट जारी हुआ

हल्द्वानी। भारत सरकार के संस्कृति मंत्रालय, साहित्य अकादेमी और प्रमुख संस्कृत विश्वविद्यालयों के संयुक्त तत्वावधान में प्रख्यात संस्कृत विद्वान आचार्य दिनेश चन्द्र जोशी की जन्मशती वर्ष के अवसर पर लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय में राष्ट्रीय संगोष्ठी आयोजित की गई।

कार्यक्रम में आचार्य दिनेश जोशी जी के जीवन, कृतित्व और भारतीय संस्कृति में उनके योगदान को याद करते हुए उनकी स्मृति में डाक टिकट का विमोचन किया गया। डाक टिकट का विमोचन दिल्ली परिमण्डल के निदेशक डाक संवाएं सुनील कुमार और संस्कृति मंत्रालय के संयुक्त सचिव समर नन्दा ने किया। कार्यक्रम में साहित्य अकादेमी के अध्यक्ष डॉ. माधव कौकिश, कुलपति प्रो. मुरली मनोहर पाठक सहित कई विद्वान उपस्थित थे। समर नन्दा ने बताया कि केन्द्रीय गृह एवं सहकारिता मंत्री अमित शाह की अध्यक्षता में गठित राष्ट्रीय क्रियान्वयन

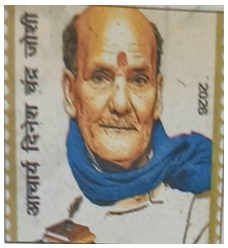

समिति ने 11 अप्रैल 2026 से 11 अप्रैल 2027 तक देशभर में कार्यक्रम आयोजित करने का निर्णय लिया है।

संस्कृत, वैदिक परम्परा और भारतीय संस्कृति का महान सम्वाहक बताते हुए संस्कृत, पत्रकारिता, योग, आयुर्वेद और पाण्डुलिपि संरक्षण में उनके योगदान को याद किया गया।

आचार्य दिनेश चन्द्र जोशी नैनीताल जनपद के मटेला ग्राम में जन्मे प्रख्यात संस्कृत विद्वान, सांस्कृतिक चिन्तक और आध्यात्मिक मनीषी थे। उन्होंने अपना सम्पूर्ण जीवन संस्कृत भाषा, वैदिक परम्परा और भारतीय संस्कृति के संरक्षण एवं संवर्धन को समर्पित किया। वे संस्कृत, पत्रकारिता, योग, आयुर्वेद, दर्शन व पाण्डुलिपि संरक्षण जैसे क्षेत्रों में सक्रिय रहे। उन्होंने युवाओं को संस्कृत अध्ययन और भारतीय ज्ञान परम्परा से जोड़ने के लिए निरन्तर प्रयास किया तथा सांस्कृतिक जागरण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। उनका जीवन भारतीय सभ्यता और आध्यात्मिक मूल्यों के प्रचार-प्रसार के लिए प्रेरणास्रोत है।

Print to PDF without this message by purchasing novaPDF (http://www.novapdf.com/)

रं कल्याण संस्था का स्थापना दिवस

पारम्परिक परिधान पहन युवा हुए शामिल

हल्द्वानी/धारचूला। रं कल्याण संस्था का स्थापना दिवस धूमधाम से मनाया गया। बताते चलें कि 18 मई 1989 को इस संस्था की लखनऊ में स्थापना हुई थी। तभी से इसकी इकाईयों द्वारा आयोजन किये जाते हैं। इस बार भी जगह-जगह आयोजनों का जोर रहा।

इस अवसर पर हल्द्वानी में परम्परागत वेशभूषा में उपस्थित समुदाय के लोगों ने अपनी संस्कृति के विकास के लिये विचार विमर्श करने के साथ ही युवाओं को जोड़ने पर जोर दिया। मुख्य अतिथि के रूप में नृप सिंह नपलच्याल और विशिष्ट अतिथि चन्द्र सिंह नपलच्याल उपस्थित थे। श्रीमती पुष्पा दुग्ताल के मंगलाचरण गीत, स्थापना दिवस पर स्वयं रचित गीत तथा युगल गीत में जीवन सिंह दुग्ताल की संगत की सभी ने प्रशंसा की। उधर धारचूला में आयोजन को लेकर संस्था ने लोग जुटे। संस्था का 38वां स्थापना दिवस भोटिया पड़ाव में रंगारंग आयोजन के बीच हुआ। मुख्य अतिथि सेवानिवृत्त प्रधानाचार्य भवानी देवी का संस्था के पराधिकारियों ने सम्मान किया। संस्था अध्यक्ष प्रकाश सिंह गुंज्याल ने कहा कि 38 वर्ष पूर्व शुरू हुई संस्था आज विशाल वटवृक्ष बनकर पूरे समाज को मजबूती प्रदान कर रही है। इस मौके पर 80 वर्ष से अधिक आयु के बुजुर्गों और वरिष्ठ नागरिकों को सम्मानित किया गया। दीवान सिंह गर्ब्याल, हरक सिंह बुदियाल, महिमन सिंह ह्यांकी, दौलत फकलियाल, दल बहादुर गर्ब्याल, धन राज एतवाल और मान सिंह यर्सो को पारम्परिक खदक भेंट कर सम्मानित किया गया। इसके अलावा पूर्व आईजी विमला गुंज्याल, धीरेन्द्र सिंह बुदियाल, जनजाति महिला उत्थान समिति की भागेश्वरी देवी को भी सम्मान प्रदान किया गया।

इससे पूर्व रं संग्रहालय परिसर में पारम्परिक पगड़ी बांधने (च्यंठलो चिल्म) और महिलाओं के पारम्परिक परिधान च्यूंगबाला पहनने का विशेष प्रशिक्षण आयोजित किया गया। नई पीढ़ी को पारम्परिक परिधानों के प्रति जानकारी हेतु यह प्रशिक्षण था जिसमें युवाओं ने रुचि ली। संस्था अध्यक्ष प्रकाश सिंह गुंज्याल और महासचिव महेन्द्र सिंह ह्यांकी ने कहा कि सदियों पुरानी यह वेशभूषा अब दुर्लभ परिधानों की श्रेणी में शामिल होती जा रही है।

पिथौरागढ़ में रं जनजाति हॉस्टल में सीएमओ डॉ. सन्तोष नबियाल ने दीप प्रज्ज्वलित कर कार्यक्रम का शुभारम्भ किया।

दुर्गा की याद में स्मृति अंक लेकर मुनस्यारी गये आनन्द

सभा को सम्बोधित करते हुए सम्पादक आनन्द बल्लभ उप्रेती

डॉ.पंकज उप्रेती

'पिघलता हिमालय' इस अंक के साथ ही अपनी स्थापना के 48 वर्ष पूर्ण कर चुका है। अगला अंक स्थापना के 49वें वर्ष में प्रवेश कर जाएगा। समाचार-विचार की इस लम्बी यात्रा में स्व.दुर्गासिंह मर्तोलिया की 86वीं जयन्ती भी है। मात्र 50साल की उम्र में वह महकता सितारा टूट गया था जिसकी यादें आज भी 'पिघलता हिमालय' के रूप में हैं।

समाचारों की दुनिया इस पूरी दुनिया में हिलोरे लेने लगी है और तरह-तरह के मनोरंजन के साधनों पर लोग व्यस्त हैं परन्तु जीवन-जगत की सच्चाई तो यही है कि जब आप एकान्त या अकेले में हो तो आपकी अपनी दुनिया आपके मस्तिष्क में घूमने लगती है। अपने साथी के जाने के बाद 'पिघलता हिमालय' का एक विशेष अंक लेकर स्व. आनन्द बल्लभ उप्रेती मुनस्यारी गये थे। विश्व पर्यावरण दिवस पर जिस दिन स्व. मर्तोलिया की जन्मदिन होता है उसी दिन को याद करते हुए 1994 को दुर्गासिंह की स्मृति में यह अंक निकला था। यह केवल अंक नहीं बल्कि अपनों को जोड़ने का सीधा सा यत्न था। अंक की तैयारी के लिये नैनीताल से गिरीश तिवारी 'गिर्दा' भी हमारे घर/प्रेस 'शक्ति प्रेस हल्द्वानी' आए और विचार किया गया। उस दौर के संसाधनों के हिसाब से मुरादाबाद से ब्लाक बनवाना, स्क्रीन प्रिंटिंग करवाना जैसे कार्य करवाए गए। इस अंक में नागार्जुन की कविता के अलावा काशीसिंह ऐरी की पहाड़ को लेकर लम्बी कविता प्रकाशित है। स्व. उमेद सिंह मर्तोलिया ने अपने भाई दुर्गा की जीवनी लिखी। सम्पादकीय में स्व. आनन्द बल्लभ जी ने 'जनम अखबार का' शीर्षक से उस सत्य को सबके सामने रख दिया जो आपाधापी में उलझे लोगों को झकझोर सकता है। कितनी पवित्रता के साथ 'पिघलता हिमालय' की कल्पना है इससे पता चलता है।

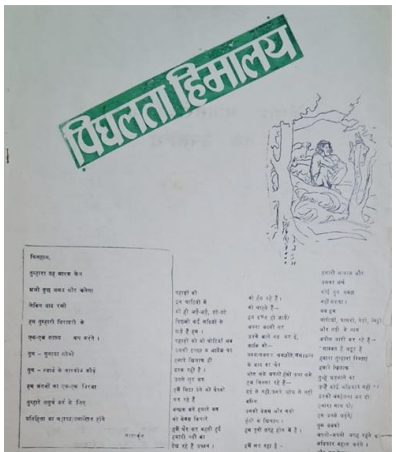

विश्व पर्यावरण दिवस पर दुर्गासिंह मर्तोलिया की याद में 5 जून 1994 को निकाला गया स्मृति अंक

अंक में उम्मेद सिंह जी लेख 'लिपू लेख पास के इस और उस पार', श्रीराम सिंह धर्मशक्तू का लेख- 'पिघलता हिमालय पिघलता समाज' है। नेत्र सिंह रावत को याद करते हुए 'पत्थर और पानी' यात्रा संस्मरण का उल्लेख है। शेर सिंह पांगती का लेख- 'तिब्बती शौका मित्रता' उत्तम सिंह सयाना का जड़ीबूटियों से सम्बन्धी लेख है।

अंक की इस महक को लेकर स्व. आनन्द बल्लभ जी अपने मित्र स्व. दुर्गा सिंह की कर्मभूमि/जन्मभूमि मुनस्यारी गये। साधन/संसाधनों की कमी अपनी जगह थी लेकिन जलाए गये दिए को बचाए रखने की जिद अपनी जगह। मुनस्यारी में उप्रेती जी के साथ पत्रकार स्व.पारसनाथ और श्री हरीश पन्त भी गये। आयोजन में 'दुर्गा स्मृति अंक' वितरित करने के साथ ही सभा हुई। हर कोई इस बात को कह रहा था 'पिघलता हिमालय' के रूप में दुर्गा सिंह की यादें जिन्दा हैं। इस सभा में गणमान्य जनों ने सीमान्त की समस्याओं के साथ ही उन क्षणों का स्मरण किया जब दुर्गा सिंह व्यवस्था के लिये शासन प्रशासन के खिलाफ मोर्चा खोल देते थे। दुर्गा सिंह का भोलापन, फक्कड़पन, पियक्कड़ी, घुमक्कड़ी से लेकर अपने समाज को स्थापित करने के लिये जुनून का उल्लेख हुआ। इसी सभा में आनन्द बल्लभ उप्रेती ने हिमालय की गोद में बसी संस्कृति से लेकर जीवन के सच का यादगार व्याख्यान दिया था।

वर्षों की इस यात्रा में हमारे बीच पिघलता हिमालय के संस्थापक आनन्द बल्लभ उप्रेती, दुर्गासिंह मर्तोलिया और श्रीमती कमला उप्रेती नहीं हैं लेकिन उनकी व उनके साथ अनन्त यात्रा पर निकले तमाम साथियों की यादें धरोहर के रूप में है। यह केवल समाचार पत्र नहीं बल्कि इतिहास का भण्डार हो चुका है और जब-जब सीमान्त की वादियों पर शोध होंगे यह दस्तावेज बुनियाद होगा।

HIMALAYAN MUNSYARI STORE
Johar Nagar, Bhotia Padav, Haldwani
(एक छत के नीचे अपने हस्तशिल्प, कुटीर उद्योग के उत्पादों का विश्वसनीय प्रतिष्ठान)
मो.- 8755116161. 84779321316 वीरेन्द्र सिंह मपवाल

Print to PDF without this message by purchasing novaPDF (http://www.novapdf.com/)

पिघलता हिमालय के बढ़ते कदमों की हार्दिक शुभकामनाओं के साथ-

नवीन गारमेंट्स

नवीन पन्त, मेन बाजार बेरीनाग

पिघलता हिमालय के बढ़ते कदमों की हार्दिक शुभकामनाओं के साथ-

श्रीमती शकुन्तला दताल

समाजसेवी

जौलजीवी/धारचूला

Hotel Bala Paradise

Tiksain, Munsiari

Ph. 05961222237, 9412951678

धमोत होम स्टे

धरमघर/चौकोड़ी

(एडवेंचर जोन, ट्रेकिंग, माउंटेन वाइकिंग, स्थानीय व्यंजन)

मो. 9760007148 www.mountainheights.in

न तेरा न मेरा Thats मो. 9458920379

APNA GHAR 6396098804

चौकोड़ी

HOTEL RESTRO BANQUET

Near by- (माँ कोटगाड़ी, नौलिंग देव, पातालभुवनेश्वर)

पितृछाया- स्वतंत्रता संग्राम सेनानी स्व. जोगासिंह मर्तोलिया

YOGA MEDITATION HOMELY FOOD LIVE MUSIC BIRTHDAY WEDDING

होटल माँ नन्दादेवी एण्ड बारातघर

नानासेम, मुनस्यारी

गणेश सिंह मर्तोलिया एण्ड सन्स

हार्डवेयर, बिल्डिंग मैटीरियल, जनरल आर्डर सप्लायर्स

फोन सम्पर्क- 05961-222236 मो.- 8958525979, 9411134775

घर से बाहर अपनों का साथ

होटल लक्ष्य इन

मदकोट

नरेन्द्र सिंह रावत

सम्पर्क 7351285555

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक श्रीमती गीता उप्रेती द्वारा पिघलता हिमालय, जे०के०पुरम्, सेक्टर डी, छोटी मुखानी, हल्द्वानी (नैनीताल) उत्तराखण्ड से प्रकाशित एवं शक्ति प्रेस, जे०के०पुरम्, सेक्टर डी, छोटी मुखानी, हल्द्वानी(नैनीताल) से मुद्रित।

सम्पादकः श्रीमती गीता उप्रेती फोन/मोबाइल 9458961490, 9411770280, 9411301014,

editorpighaltahimalay@gmail.com

Website- www.pighaltahimalay.com

Print to PDF without this message by purchasing novaPDF (http://www.novapdf.com/)